बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर के 15वें स्थापना दिवस समारोह–2024 के अवसर पर किसानों के सफलता की कहानी के अवयव

कृषक का नामः श्री चितरंजन कुमार
ग्राम : मराची
प्रखण्ड : परैया
जिला : गया
मो0 सं0 : 9934652532

1. प्रारंभिक परिस्थिति (Initial Situation) :

46 वर्षीय श्री चितरंजन कुमार गया जिला के परैया प्रखण्ड व मराची गाँव के निवासी हैं, जिनका जीवन संघर्षों से भरा रहा है। 1992 में मैट्रिक उत्तीर्ण होने के बाद पारिवारिक आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण आगे की पढ़ाई नहीं कर पाये। कभी चॉकलेट की फैक्ट्री तो कभी छोटे–छोटे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर किसी तरह अपना खर्च निकाला। ट्यूशन पढ़ाने के दौरान नामकुम (झारखण्ड) निवासी श्री रमेश सिंह से हुई, जहाँ 300 रुपये/महिना वेतन पर नौकरी शुरू की और मधुमक्खीपालन के बारे में जानकारी हासिल की।

वर्ष 2000 में पटना आकर, पटना जिला निवासी मधुमक्खीपालक श्री वियज कुमार के यहाँ 900 रु0/महिना के वेतन पर नौकरी की जहाँ 2 साल कार्य करने के बाद जो पैसा बचाया था उससे 10 मधुमक्खी बक्सा खरीदकर अपना व्यावसाय अपने गृह जिला गया में शुरू किया। एक साल बाद पुनः 30 बक्सा और खरीदा और सफतलापूर्वक मधुमक्खीपालन किया। किन्तु 2007–08 में माईट के प्रभाव से सबकुछ खत्म हो गया। पूँजी के अभाव में वे 2 साल घर पर बैठे रहे। फिर वर्ष 2010–11 में गया जिला के ही मधुमक्खीपालक श्री शशि कुमार के यहाँ 3000रु0/महीना के वेतन पर नौकरी की, जहाँ 2 साल नौकरी करने के बाद पुनः 50 बक्सा से मधुमक्खीपालन का अपना व्यावसाय शुरू किया और वर्तमान में 1400 बक्सा के साथ कार्य करते हुए सुरभि के नाम से उत्पाद के साथ मधुमक्खीपालन के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है।

2. चुनौती (Challenge) :

- मधुचारा की कमी से उत्पादन प्रभावित होना
- कीट–व्याधि के प्रकोप से काफी पेरशानी होना
- कुशल श्रमिकों की कमी
- बाजार की कमी एवं उचित मूल्य न मिलना
- कृषि में इस्तेमाल रसायनों का मधुमक्खियों की संख्या प्रभावित होना

- मधुमक्खियों का समय पर उचित प्रबंधन नही हो पाना

3. संभावित विकल्प (Solution) :

श्री कुमार मधुमक्खी पालकों के यहाँ कार्य करते हुए इसके बारे में जानकारी हासिल की और खुद 2007–08 से मधुमक्खी का अपना व्यावसाय शुरू किया। किन्तु कुछ दिक्कतों के कारण पुनः उन्होंने वर्ष 2012–13 में कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर से प्रशिक्षण लेकर तकनीकी जानकारी ली और सफलतापूर्वक व्यावसाय कर रहे हैं।

4. कार्य योजना (Activities) :

कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया से मधुमक्खीपालन का प्रशिक्षण लेकर उन्होंने 2012–13 में 50 बक्सों के साथ पुनः रोजगार शुरू किया और कुशल हुनर से अन्य 16 मधुमक्खीपालकों के साथ एक सफल उद्यमी के रूप में उभरे श्री कुमार आज अपना उत्पाद सुरभि के नाम से पंजीकृत कराकर बिक्री कर रहे हैं और वर्तमान में 1400 बक्सों के साथ अपना व्यावसाय कर रहे हैं।

5. परिणाम (Results) :

जहाँ श्री कुमार 2011–12 में महज 2 टन मधु प्रति वर्ष उत्पादन जिससे लगभग 1,25,000रु0 आमदनी प्राप्त करते थे जिसे वर्तमान में बढ़ाकर 1400 बक्सों के साथ लगभग 22 टन मधु प्रतिवर्ष उत्पादन करते हुए अपनी आमदनी 60,00,000 रु0 कर ली है।

6. उत्प्रेरक संस्था (Facilitating Organization) :

I. कृषि विज्ञान केन्द्र, मानपुर, गया
II. बिहार कृषि विश्वविद्यालय (बीएयू), सबौर, भागलपुर
III. खादी ग्राम उद्योग, गया

7. फोटाग्राफ्स (Action Photographs of Activity) :